खण्ड-12, अंक-1, वर्ष-2024, मु0प्र0 42-45
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v12i1.8
SJIF (2024) : 8.287

Absenteeism of students in educational institutions in the current context: An analysis

Babita Chauhan
Department of Education, Lucknow University, Lucknow-226 007, U.P., India
chauhanbabita889@gmail.com

Received: 30-10-2024, Accepted: 26-12-2024

Abstract- This research paper makes an in-depth study of the ill effects of absenteeism of students in educational institutions. At present, the facility of education is available to every human being by the government. Despite these facilities, the number of students in educational institutions is decreasing day by day due to multidimensional reasons. This study tries to understand the reasons due to which students remain absent from college and the ill effects of absenteeism along with its possible solution. This study also reveals that while the facilities of technology are increasing the knowledge of the students, the distance in the relationship between the teacher and the student is widening, due to which a decrease in moral and life values are seen in the students. Along with the increase in knowledge in any student, it is very important to develop the qualities of becoming an ideal citizen, through which along with the development of the individual, the society and the nation will also develop. The conclusion is that solving the problem of absenteeism is important for student life as well as their social and academic development.

Key words- Absenteeism, education system, technology impact, personal and social factors, economic condition

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों की अनुपस्थितिः एक विश्लेषण

बबीता चौहान
शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ–226 007, उ0प्र0, भारत
chauhanbabita889@gmail.com

सार– यह शोध पत्र शिक्षण संस्थानों में छात्रों की अनुपस्थिति के कुप्रभाव का गहन अध्ययन करता है। वर्तमान समय में सरकार द्वारा शिक्षा की सुविधा प्रत्येक मानव जाति के लिए उपलब्ध है। इन सुविधाओं के बाद भी बहुआयामी कारणों से शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि वह कौन से कारण है जिससे विद्यार्थी शिक्षण संस्थाओं में अनुपस्थित रहते है व अनुपस्थिति के दुष्परिणामों के साथ इसका संभावित समाधान कैसे किया जा सकता है। यह अध्ययन यह भी प्रदर्शित करता है कि प्रौद्योगिकी की सुविधाएं जहाँ विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि कर रही है वहीं शिक्षक छात्र के बीच संबंधों की दूरी बढ़ती जा रही है जिससे विद्यार्थियों में नैतिक व जीवन मूल्यों में कमी देखने को मिलती है। किसी भी विद्यार्थी में ज्ञानवृद्धि के साथ–साथ एक आदर्श नागरिक बनने के गुणों का विकास होना बहुत ही आवश्यक है जिसके द्वारा व्यक्ति की विकास के साथ समाज व राष्ट्र का भी विकास होगा। निष्कर्ष में पाया गया है की अनुपस्थिति की समस्या का समाधान विद्यार्थी जीवन के साथ–साथ उनके सामाजिक व शैक्षिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

बीज शब्द– अनुपस्थिति, शिक्षा व्यवस्था, प्रौद्योगिकी प्रभाव, व्यक्तिगत व सामाजिक कारण, आर्थिक स्थिति

1. **परिचय**– किसी भी देश व राष्ट्र की प्रगति एवं उन्नति का आधार सदैव से शिक्षा ही रहा है। चाहे प्राथमिक स्तर हो या उच्चतर या फिर कोई भी शिक्षण व प्रशिक्षण संस्था, सभी उत्तरोत्तर प्रगति करना चाहते हैं क्योंकि सभी में विकास का लक्ष्य निहित होता है। और यही कारण है कि सभी संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी उपस्थित होकर उस प्रगति व उन्नति के लक्ष्य में सहायक हो। यह तभी संभव हो सकता है कि

उन शिक्षण संस्थानों में शिक्षक व शिक्षार्थी की उपस्थिति आवश्यक हो, प्रतिशत चाहे कोई भी क्यों ना हो लेकिन उपस्थिति की अनिवार्यता अवश्य होनी चाहिए।[1] तभी समाज व राष्ट्र उन्नति व समृद्धि का लक्ष्य प्राप्त कर पायेंगे अन्यथा यूं ही शिक्षण संस्थाओं की वृद्धि तो होती रहेगी परंतु अध्यनरत छात्रों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती रहेगी। जो कि शिक्षण प्रबंध तंत्रों, संस्थानों व विद्यार्थियों के भविष्य के प्रति प्रश्न चिन्ह होगा कि क्यों हम समय रहते इन सभी संस्थाओं की उन्नति का विचार और उनकी उपस्थिति के विषय में न केवल सजगता हो बल्कि निर्णयात्मक दिशा निर्देशित करें। इससे पूर्व कक्षा व विद्यालय में उपस्थिति का मानक व नियमावली भी निर्धारित हो, जिससे भविष्य की ओर यह चिंता व संशय न रहे कि गुणवत्ता परक शिक्षा के उद्देश्य को कैसे पूर्ण किया जाए। समय–समय पर विभिन्न नीतियां व योजनाएं भी बनायी गयी ,जो यह दर्शाती हैं, कि समाज के सभी वर्गों जातियों एवं उपजातियां को सार्वभौमिक शिक्षा उपलब्ध कारायी जाए परंतु वर्तमान की स्थिति व परिस्थिति यह दर्शाती है कि संस्थाओं को बंद किया जाए या स्वायत्त संस्थानों में परिवर्तित किया जाए, क्योंकि दिन प्रतिदिन संस्थाओं में अध्यनरत विद्यार्थियों के उपस्थिति कम होती जा रही है। कारण बालकों का अध्ययन से मोह भंग होना, रोजगार के प्रति उन्मुखता, शिक्षा में मात्र डिग्री की उपलब्धि होना भी हो सकता है परंतु ऐसा क्यों है यह जानने से पूर्व उपस्थिति क्या है, क्यों आवश्यक है। यह जानना अति आवश्यक हो जाता है।

2. **आवश्यकता एवं महत्व**– वर्तमान समय में भोगवादी प्रवृत्तियों के कारण प्रतिस्पर्धा भरे जीवन में विद्यार्थी के लिए आवश्यक हो जाता है, कि वह निष्ठापूर्वक अध्ययन में लगे रहें। इसके लिए उन्हें नियमित रूप से संस्थानों में उपस्थित होकर शिक्षा ग्रहण करनी होगी, क्योंकि सही ज्ञान केवल एक शिक्षक ही दे सकता है। कुछ विद्यार्थी केवल डिग्री लेने के लिए ही महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों में प्रवेश कराते हैं, और परीक्षा के समय कुछ पुस्तकों एवं उत्तर मालाओं व सीरीजों को पढ़कर पास भी हो जाते हैं। परंतु ऐसे विद्यार्थियों को समस्या का सामना करना पड़ता है। जब वह किसी प्रतियोगी परीक्षा में बार–बार असफल हो जाते हैं जिससे उचित एवं उनकी योग्यतानुसार रोजगार नहीं प्राप्त होता है, और आर्थिक समस्या उत्पन्न होने लगते हैं। इसलिए विद्यालयों में अनुपस्थिति का अध्ययन करना आवश्यक है। महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में शिक्षकों को अनुपस्थिति को लेकर गंभीर रूप से विचार करना होगा और सही निर्णय द्वारा भविष्य में होने वाले दुष्प्रभावों को कम किये जा सके ऐसे प्रयास किया जा सके जिससे महाविद्यालय में पर्याप्त एवं योग्य शिक्षक और प्रशिक्षक की पूर्ति आवश्यकतानुसार होती रहें। शिक्षण संस्थानों के अंदर विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए केवल उनके पहचान पत्र की जांच करना ही काफी नहीं है बल्कि यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि विभिन्न विषयों में नामांकित विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति की मात्रा क्या है, विद्यार्थियों की अनुपस्थिति दर अधिक पाई जाती है, तो वहाँ के शिक्षक एवं अधिकारियों को अनुपस्थिति के कारणों के विषय में गंभीरता से विचार करना चाहिए। और उनके अभिभावकों एवं संरक्षकों से समय–समय पर बात करने के साथ–साथ उन कारणों को समाप्त करने के लिए उचित निर्णय एवं नियमावली का आवश्यकतानुसार बदलाव भी करना चाहिए। वर्तमान समय में 75 प्रतिशत उपस्थिति की अनिवार्यता जो केवल लिखित रूप में ही रह गयी है।[3] इसे गंभीरता पूर्वक लागू करने के साथ इस पर ध्यान देने की भी आवश्यकता है। जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रदर्शन, शारीरिक व मानसिक स्थिति, अध्ययन में रुचि, सामाजिक व व्यक्तिगत समस्या को सुधारने के साथ संस्थान की प्रतिष्ठा पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभाव को रोका जा सकता है।

3. **संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण**– विश्वविद्यालय के छात्रों में अनुपस्थिति के कारण और शैक्षणिक प्रभाव के अध्ययन में पाया गया है कि अच्छी गुणवत्ता और अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी नियमित रूप से कक्षाओं में भाग ले। अनुपस्थिति के मुख्य कारण परिवहन की समस्या, व्यक्तिगत योग्यता में कमी, सामाजिक समझौते, परीक्षाओं के निकटता, शिक्षकों के गुणवत्ता प्रेरणा व कार्य प्रणाली पाया गया था।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति से संबंधित एक अध्ययन में पाया गया कि अभिभावक व शिक्षक के बैठक में अभिभावकों से सुझाव मांगने पर उन्होंने कहा कि अगर विद्यार्थी अधिक समय तक विद्यालय से अनुपस्थित रहता है, तो इसकी सूचना अभिभावकों को दी जाए तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण गतिविधियां भी करायी जाए।

गिल केपेन्स[2] ने स्कूल से अनुपस्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के अध्ययन में पाया कि सभी अनुपस्थिति का उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, लेकिन बिना कारण की अनुपस्थिति विशेष रूप से स्कूल वर्ष की शुरुआत और अंत में सबसे अधिक हानिकारक होती है।

4. **शोध के उद्देश्य**

1– शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन करना।

2– शिक्षण संस्थानों में अनुपस्थिति के दुष्परिणाम।
3– शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के संभावित समाधान का अध्ययन करना।

5. **शोध विधि**– इस शोध पत्र में शोध विधि के रूप में सामग्री विश्लेषण का प्रयोग किया गया है जिसके अंतर्गत अनुपस्थिति से संबंधित दुष्प्रभावों का विश्लेषण किया गया है तथा अनुपस्थिति विश्वविद्यालय के नीति नियमों, शिक्षक व अभिभावक की बैठक से जुड़ी जो भी सामग्री इंटरनेट, शोध पत्रों तथा समाचार पत्रों आदि से प्राप्त हुए उनका अवधारणात्मक विश्लेषण कर निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास किया गया है।

6. **अनुपस्थिति के कारण**

6.1 **व्यक्तिगत कारण**– शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के अनुपस्थिति का कारण कई बार गंभीर बीमारियां होती हैं, लेकिन इसके अलावा विद्यार्थियों के सामने ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती है, जिससे विद्यार्थी चाहकर भी उपस्थित नहीं हो पता। जैसे– यातायात की समस्या, मानसिक तनाव, शैक्षणिक असफलता का डर और कभी–कभी घूमने की इच्छा को पूरा करने के लिए भी वह अनुपस्थित रहते हैं।

6.2 **सामाजिक व पारिवारिक कारण**– कुछ समाजों में शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव अधिकतर बालिकाओं की उपस्थिति पर पड़ता है। वह घर के कार्य और परिवार की जिम्मेदारियां निभाने में अधिक समय व्यतीत करती रहती हैं। इसके अलावा उनके अनुपस्थिति का कारण समाज में असुरक्षित वातावरण व सामाजिक कुरीतियां भी हैं। वहीं बालकों के ज्यादातर अनुपस्थिति का कारण परिवार की आर्थिक तंगी से काम पर जाना तथा दोस्तों के दबाव में आकर भी विद्यार्थी कॉलेज बंक कर सकते हैं। समाज में सोशल मीडिया का भी सकारात्मक के साथ नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों की पढ़ाई पर पड़ रहा है, जिससे उनकी पढ़ाई के प्रति रुचि कम होती जा रही है। कई बार विद्यार्थी सामाजिक कार्यों यथा– (शादी, मुंडन या पारिवारिक एवं व्यक्तिगत समारोह) में शामिल होने को वरीयता देते हैं कॉलेज को नहीं। जिसके दुष्प्रभाव देखे जा सकते हैं जो उनके उपलब्धियों को प्रभावित करते हैं।

6.3 **शैक्षिक व संस्थागत कारण**– शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को रोचक व प्रासंगिक तरीके से पढ़ाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी का पढ़ाई में रुचि बनी रहे। उबाऊ और अप्रासंगिक कक्षाओं तथा जटिल विषयों को समझने में विद्यार्थियों को कठिनाई महसूस होती है, जिससे कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या धीरे–धीरे कम होने लगती है। संस्थानों में उपयुक्त सुविधाओं जैसे– खान–पान, शौचालय एवं स्वच्छता के साथ–साथ पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कंप्यूटर, इंटरनेट तथा शैक्षिक व प्रेरणादायक वातावरण का अभाव भी इसके कारण हो सकते हैं।

7. **अनुपस्थित होने के दुष्परिणाम**– कक्षाओं में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के बहुत से नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। विद्यार्थी जब नियमित रूप से कक्षाओं में अनुपस्थित रहने लगता है, तो वह पाठ्यक्रम की महत्वपूर्ण सामग्री अध्ययन से वंचित हो जाता है। जिससे उसके परीक्षा परिणाम में गिरावट होने के साथ वह अपने शिक्षकों और सहपाठियों से उचित वार्तालाप नहीं कर पाते, जिससे वह शैक्षणिक गतिविधियों व चर्चाओं में पीछे रह जाते हैं। अनुपस्थिति अनुशासनहीनता को बढ़ाती है, जो विद्यार्थियों के समय प्रबंधन कौशल को प्रभावित करता है, जिसके द्वारा उन्हें भविष्य में व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वह विद्यार्थी शिक्षक और प्रशासन के सहायता व समर्थन का भी लाभ नहीं उठा पाते हैं।

8. **अनुपस्थिति के संभावित समाधान**– शिक्षण संस्थानों में प्रत्येक शिक्षकों का यह कर्तव्य है, कि वह विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत रूप से संवाद करें वह उनकी समस्याओं को समझें और परामर्श द्वारा समाधान करने का प्रयास करें। कॉलेज में आवश्यकतानुसार शिक्षक व अभिभावक की बैठक होनी चाहिए, जिसमें विद्यार्थियों के सभी कार्यों की जानकारी अभिभावकों को दी जाए, जिससे वे अपने बच्चों के सही गलत क्रिया व व्यवहारों के प्रति जागरुक रहेंगे और विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव भी पड़ेगा। जो विद्यार्थी किसी गंभीर कारणों से उपस्थित नहीं हो पाते उनके लिए उपस्थिति की लचीली नीति या ऑनलाइन पाठ्यक्रम की सुविधा दी जा सकती है। वर्तमान में प्रौद्योगिकी का प्रभाव दिन– प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। ऐसे में विश्व में कोई भी कहीं से भी ज्ञान प्राप्त कर अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकता है। लेकिन एक आदर्श नागरिक बनना, समाज व देश के प्रति कर्तव्यों का पालन करना, नैतिक व जीवन मूल्यों का विकास आदि विद्यार्थी कक्षाओं में ही सीख सकता है। यह तभी संभव है, जब शिक्षक विद्यार्थियों को कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित होने के लिए प्रोत्साहित करे एवं प्रेरक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराये एवं प्रोत्साहन के रूप में अधिकतम उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार भी दें,

इससे विद्यार्थी महाविद्यालय आने के साथ कक्षाओं में उपस्थित होने के लिए प्रेरित एवं जागरूक होंगे।[4] सामुदायिक भागीदारी जिसमें विद्यार्थियों को सामाजिक गतिविधियां, खेल के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाएं भी महाविद्यालय में आयोजित की जायें। जिससे विद्यार्थी कॉलेज से जुड़ाव महसूस कर सके। जिन विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का कारण परिवहन की समस्या है, ऐसे विद्यार्थी के लिए संस्थानों की तरफ से परिवहन प्रबंधन की कोशिश की जा सकती है क्योंकि शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वह विद्यार्थियों की समस्या समझने के साथ उसका समाधान भी उनकी आवश्यकता अनुसार करने का प्रयास करें। इन समाधानों के इतर यथासम्भव अन्य उपायों को लागू करें जिससे विद्यार्थियों की अनुपस्थिति में सुधार होने के साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रगति में वृद्धि हो सके।

9. **निष्कर्ष**– वर्तमान समय में शिक्षण संस्थानों में बढ़ती हुई अनुपस्थिति ने प्रबंधनकर्ताओं के सामने समस्या खड़ी कर दी है क्योंकि निरंतर ऐसा ही होता रहा तो शिक्षा व्यवस्था का स्तर नीचे गिरता जाएगा। जिससे प्रबंधनकर्ताओं द्वारा बनाई गई नीति व नियमों के विफल होने की संभावना बढ़ सकती है। इस समस्या के समाधान के लिए सभी शिक्षण संस्थानों में वहां के प्रबंधन अधिकारियों व शिक्षकों द्वारा आपस में विचार विमर्श कर शिक्षा प्रणाली में सुधार करने व उपयुक्त परिसर वातावरण के साथ–साथ विद्यार्थियों के शारीरिक व मानसिक तथा सामाजिक जीवन पर ध्यान देना होगा और कक्षा उपस्थिति को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन कार्यक्रमों का आयोजन भी आवश्यक है। जिससे विद्यार्थियों की शिक्षा में सुधार होने से भविष्य में एक जिम्मेदार, जागरुक नागरिक बनने व उन्हें सही रोजगार की प्राप्ति भी होगी।

References

1. De vi, Kusum (2018) Responsibilities and roles of teachers in inclusion education: a review, (4) 7: 242-245 natividad.crespo@esic.edu, maite.palomo@esic.edu, mariano.mendez@esic.edu
2. https://www.amarujala.com/amp/bihar/cm-college-in-darbhanga-canceled-the-enrollment-of-36-students-with-less-attendance-in-class-2023-08-13
3. https://hindi.news18.com/news/nation/patliputra-university-75-percent-attendance-compulsory-in-class-for-students-7182411.html
4. https://doi.org/10.1016/j.learninstruc.2023.101769

https://prakritlok.com
https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://translate.google.com/translate%3Fu%3Dhttps://www.newportacademy.com/resources/empowering-teens/teen-truancy/%26hl%3Dhi%26sl%3Den%26tl%3Dhi%26client%3Dsrp%26prev%3Dsearch&ved=2ahUKEwi_8YTKrMeIAxV2a2wGHdS9GAAQFnoECC4QAQ&usg=AOvVaw3xkrocR2WHhk5HJyI9TrPg
https://www.newportacademy.com
https://catalog.udel.edu/content.php?catoid=90&navoid=27905#:~:text=of%20%E2%80%9CZ.%E2%80%9D-,Academic%20Leave%20of%20Absence,at%20the%20time%20of%20readmission.
https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://sxcpatna.edu.in/%25E0%25A4%25AE%25E0%25A4%25B9%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B5%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%25A6%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25AF%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B2%25E0%25A4%25AF-%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%2587-%25E0%25A4%25A8%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%25AF%25E0%25A4%25AE-%25E0%25A4%2594%25E0%25A4%25B0-%25E0%25A4%25A8%25E0%25A4%25BF/&ved=2ahUKEwjnhceF8daIAxWlR2wGHVb9OQM4ChAWegQIFBAB&usg=AOvVaw0HlNcYJQm-cKxv231FoGte
https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://translate.google.com/translate%3Fu%3Dhttps://en.apu.ac.jp/academic/class_info/class_absences/%26hl%3Dhi%26sl%3Den%26tl%3Dhi%26client%3Dsrp%26prev%3Dsearch&ved=2ahUKEwju-LXv8taIAxWjR2wGHTD1Jhw4FBAWegQI CxAB&usg=AOvVaw1ij29fYVqEl66C5kJOSzQ-